बच्चों के साथ पक्षी अवलोकन

श्रुति पी के

इन गर्मियों में, गाँव अतंग (कुरूद तहसील, ज़िला धमतरी, छत्तीसगढ़) में एक समर कैम्प आयोजित किया गया, जिसने हमें गाँव में विद्यार्थियों और एक शिक्षक के साथ पक्षी अवलोकन शुरू करने का एक मंच मुहैया कराया। यहाँ मैं आपके साथ कैम्प की कुछ प्रमुख बातों और उससे हासिल हुई समझ को साझा कर रही हूँ।

पहला दिन

पहले दिन की शुरुआत हमने उन स्थानीय पक्षियों के नामों की सूची बनाकर की जिनसे बच्चे या तो परिचित थे या अपने आस-पास उन्हें देखते थे। उन्होंने उत्साह से इसकी शुरुआत की — कौवा! मुर्गी! पडकी! मैना! मिट्ठू! गौरैया! बगुला! कोयल...। इसके बाद एक लम्बी चुप्पी रही। सूची में हम कुछ पंछियों के नाम ही जोड़ सके।

मैंने कहा, “बस इतने ही?”

“नहीं दीदी और भी हैं मगर हम नाम नहीं जानते।”

“चलो एक चीज़ करके देखते हैं — यहाँ ऐसे स्थानीय पक्षियों के 30 फ्लैश कार्ड हैं जिन्हें हम अपने आस-पास देख सकते हैं। एक काम करते हैं, हम इन्हें अपने साथ रखकर बाहर खोजने चलेंगे और देखेंगे कि हम इन कार्डों की सहायता से कितनी चिड़ियों को पहचान सकते हैं।”

पक्षी देखने के इस ट्रिप पर जाने से पहले हमने विद्यार्थियों को साफ़-साफ़ कुछ सरल मगर महत्त्वपूर्ण निर्देश दिए। जैसे जितना सम्भव हो चुप रहें। अचानक कोई गतिविधि न करें। अगर, किसी को सहसा कोई बात कहनी ही हो तो वह फुसफुसाकर या इशारों में कहे। मैंने उनसे कहा कि पक्षी ध्वनि के प्रति बहुत संवेदनशील होते हैं। वे हमारी अपेक्षा ज़्यादा बेहतर तरीक़े से ध्वनियों को सुन सकते हैं। यदि कोई अलग तरह की चिड़िया को देखता है तो उसे धैर्य रखना चाहिए, उत्साह में चिल्लाना नहीं चाहिए ताकि सभी लोग उस चिड़िया के नज़दीक पहुँच सकें और चिड़िया के उसी जगह पर मौजूद रहने की सम्भावना बनी रहे ताकि सभी लोग उसे देख सकें।

साहू भवन (एक सार्वजनिक भवन जहाँ समर कैम्प आयोजित हुआ था) के बाहर गाँव का सबसे बड़ा विशाल पीपल का वृक्ष था। हमने इस वृक्ष पर दो भूरे बगुले देखे जो अपने घोंसले के नज़दीक बैठे हुए थे। हमने इन बगुलों को फ्लैश कार्ड पर मौजूद चित्र से मिलाया और उन्हें वहाँ के स्थानीय नाम ‘तालाब बगुला’ के रूप में पहचाना।

उसके बाद हम पास के एक धान के खेत में गए। यह सूखा हुआ था और इसे बरसात आने के बाद बुवाई करने के लिए जोता गया था। नज़दीक में ही एक तालाब था, जो पेड़ों से घिरा हुआ था, जिस पर बहुत से पक्षियों का बसेरा था। अगले आधे घण्टे के दौरान हमने एक सूर्यपक्षी (Sunbird), दो महोक (Great Coucal), चार कालकण्ठ पक्षी (Oriental Magpie Robins) तीन मवेशी बगुले (Cattle Egret), दो सफ़ेद गले वाली मुनिया (Indian Silverbill), दो कालकलाची (Black Drongo) और तीन काली चील (Black Kite) देखीं।



चित्र-1 : अतंग गाँव में समर कैम्प के हिस्से के रूप में पक्षी अवलोकन।



चित्र-2 : पीपल के पेड़ पर पक्षी और घोंसलों को देखते हुए विद्यार्थी।

दूसरा दिन

अगले दिन, हमारे समूह में 30 बच्चे हो गए, जो कक्षा-2 से लेकर कक्षा-7 तक के थे। उनकी क्लास टीचर साथ में थीं। हमने 'पीपल' के पेड़ से शुरू किया। उस दिन हमने तीन अलग-अलग बगुले देखे (छोटा बगुला, मवेशी बगुला, तालाब बगुला), दो तरह की मैना — दो सामान्य मैना और एक एशियाई चितकबरी मैना, तीन कलसिरी बुलबुल और चार गिलहरियाँ देखीं।

हमने इस विशाल पीपल में चार घोंसले देखे और हमने पहचाना कि ये घोंसले मैना, मवेशी बगुला, छोटा बगुला और तालाब बगुला के हैं।

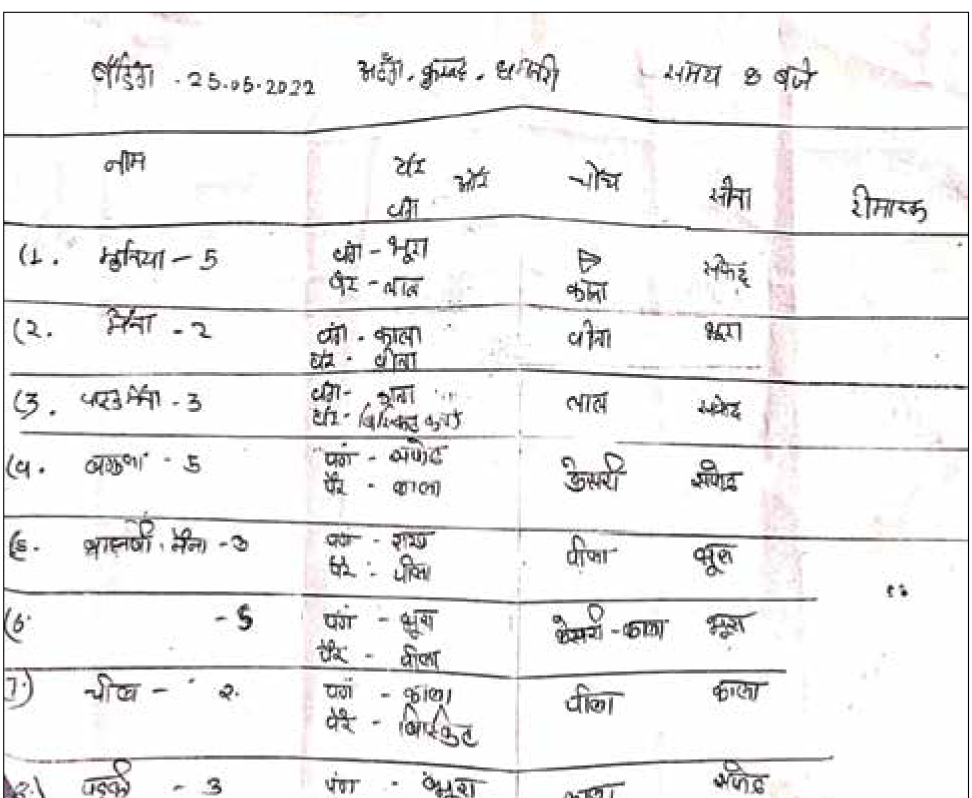
कक्षा-2 के एक बच्चे ने पेड़ की तरफ़ देखते हुए कहा, "तो अगर कोई इस पेड़ को काटेगा तो कितनों का घोंसला चला जाएगा।"

"हाँ सही बात है, एक पेड़ बहुतों के लिए उनका घर है," कक्षा-5 के एक विद्यार्थी ने कहा।

मैंने देखा कि किसी शिक्षक द्वारा बच्चों को पर्यावरण शिक्षा के विषय पर व्याख्यान देने की बजाय जब बच्चे ख़ुद से पर्यावरण संरक्षण के महत्त्व को महसूस करते हैं तो उसका कितना अधिक प्रभाव पड़ता है।

पक्षी अवलोकन की इस ट्रिप के बाद हमने अपने अवलोकनों को विस्तार से एक टेबल (**चित्र-3**) में दर्ज किया — चिड़िया का स्थानीय नाम, देखी गई चिड़ियों की संख्या, उनके सीने, आँखों, चोंच, पंख (बच्चे उसे उनका 'हाथ' बताते थे), पूँछ और पंजों का रंग। इसे दर्ज करने के दो उद्देश्य हैं। पहला — बच्चों को ध्यान से देखने के लिए उत्साहित करना, दूसरा — उनके डेटा/ अनुमान को दर्ज करने के कौशल को बढ़ाना (यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने में भी सहायक होता है।)

फ़ॉलोअप गतिविधियाँ



[illegible] - 25.05.2022	[illegible]		समय 8 बजे	
नाम	पैर और पंख	चोंच	सीना	रीमार्क
1. मुनिया – 5	पंख - भूरा पैर - लाल	काला	सफेद	
2. मैना - 2	पंख - काला पैर - पीला	पीला	भूरा	
3. [illegible] - 3	पंख - भूरा पैर - [illegible]	लाल	सफेद	
4. बगुला - 5	पंख - सफेद पैर - काला	केसरी	सफेद	
5. [illegible] मैना - 3	पंख - [illegible] पैर - पीला	पीला	[illegible]	
6. - 5	पंख - भूरा पैर - पीला	केसरी - काला	भूरा	
7. चील - 2	पंख - काला पैर - [illegible]	पीला	काला	
8. [illegible] - 3	पंख - भूरा	काला	सफेद	

चित्र-3 : अवलोकनों को दर्ज करना।

आने वाले दिनों में हमने विभिन्न चिड़ियों की चोंच के आकार और उनके खाने की आदतों के बीच के सम्बन्धों की चर्चा की। बगुलों की चोंच भाले की नोक जैसी होती है जिससे उन्हें मछली, शैलफ़िश, मेंढक और अन्य उभयचर प्राणियों का शिकार करने में मदद मिलती है। वहीं घरेलू गौरैया मोटा अनाज, अन्य अनाज, बीज, बहुत छोटे कीड़े और कीट पतंगों को खाती हैं। उनकी मज़बूत चोंच शंकु के आकार की होती है जिससे वे बीज और मेवे फोड़ती हैं। सूर्यपक्षी की नीचे की ओर वक्राकार लम्बी नुकीली चोंच उसे फूलों का रस खींचने में मदद देती है।

इसके बाद, हमने 'कुल', 'वंश' (genus) या 'प्रजाति' के बारे में सीखा। इसे समझने के लिए हमने ब्राह्मणी मैना, सामान्य मैना और चितकबरी मैना का उदाहरण लिया क्योंकि इस क्षेत्र में ये सामान्य तौर पर देखी जाती हैं। ये सभी एक ही कुल से सम्बन्धित हैं लेकिन अलग-अलग वंश और प्रजाति की होती हैं। इन तीनों के बीच समानता और भिन्नता को हमने दर्ज किया।

पक्षी अवलोकन से सम्बन्धित अन्य गतिविधियाँ

- कुछ समय तक एकदम शान्त रहकर विभिन्न प्रकार की ध्वनियों की सूची बनाना। हमने 7 अलग-अलग तरह की ध्वनियों की सूची बनाई — चिड़ियों की पुकार, गिलहरी, झींगुर की आवाज़ें आदि।
- चिड़ियों के पहचान पत्र बनाना जिनमें देखी गई हर तरह की चिड़ियों के बुनियादी विवरण हों। यह कक्षा-5 के विद्यार्थियों की गतिविधि थी। पहचान पत्र कार्ड पर उस चिड़िया का चित्र था। चित्र या तो बच्चे द्वारा हाथ से बनाया होता था या कोई फ़ोटोग्राफ़ होता था। चिड़िया का स्थानीय/ प्रचलित नाम, दूसरी चिड़ियों की तुलना में उसकी आकृति और आकार (उदाहरण के लिए, महोक की तुलना कोयल से की क्योंकि दोनों का रूप रंग, चोंच का रंग व आकार, सीने के पंखों, कलगी, आँखों व पंजों का रंग और रहने की जगह सब एक जैसा है, इसका अनुमान अवलोकन से निकला है)। पक्षी अवलोकन रिकॉर्ड (**चित्र-3**) रोज़ाना दर्ज किए किया जाने वाला डेटा है, वहीं पक्षियों का पहचान पत्र कुछ अवलोकनों को एकत्रित करके बनाया जाता है। पहचान पत्र बनाते समय बच्चों को यह समझने का अवसर मिलता है कि अवलोकन से अनुमान कैसे निकाले जाएँ। यहाँ लिखने के कौशल को विकसित करने की गुंजाइश भी बनती है। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि चिड़ियों के ये पहचान पत्र कार्ड पक्षी अवलोकन करने वाले नए बच्चों के लिए चिड़ियों की पहचान करने हेतु उपयोगी होते हैं।
- पुराने अख़बारों का इस्तेमाल करते हुए चिड़ियों का कोलाज बनाना (**चित्र-4**)। इस गतिविधि ने छोटे विद्यार्थियों के लिए मनोपेशीय (psycho-motor) विकास के लिए एक गुंजाइश प्रदान की और बड़े विद्यार्थियों के लिए सृजनात्मक कला के लिए एक मंच मुहैया कराया।

हम इस बात से ख़ुश हैं कि छत्तीसगढ़ में कुछ विद्यार्थियों को



चित्र-4 : महोक को दर्शाते हुए एक कोलाज बनाते विद्यार्थी।

चिड़ियों के अध्ययन के ज़रिए प्रकृति के अन्वेषण का अवसर मिल रहा है। यह पहला क़दम है और हम उम्मीद करते हैं कि इसके बाद हम और अधिक व्यवहारिक पाठों के साथ इसका अनुसरण करेंगे। यह मेरा पुख़्ता यक़ीन है कि पक्षी अवलोकन जैसी गतिविधियों का अनुभव किसी भी प्रजाति के साथ एक सम्बन्ध बनाने में मदद करता है और हमें प्रकृति के नज़दीक ले जाता है। यह हमें प्रकृति के प्रत्येक अन्य सृजन को समझने में मदद करता है, चाहे वे पेड़ हों या तितलियाँ। बहुत छोटी उम्र में इस सम्बन्ध के बनने से इन बच्चों को यह मदद मिलेगी कि वे न सिर्फ़ जीवों की एक या कुछ प्रजातियों को संरक्षित करें और उनकी देखरेख करें बल्कि जीवन भर के लिए पर्यावरण के प्रति सचेत नागरिक भी बनें। वे इस धरती की रक्षा करने में अपनी भूमिका निभाने में हिचकेंगे नहीं।

References

Ali, S. and S.D. Ripley (2001). Handbook of the birds of India and Pakistan. Volume 1. Hawks to Divers. Second Edition. New Delhi: Oxford University Press. Pp. 63-66.

Mock, D.W. (1976). Pair-formation displays of the Great Blue Heron. Wilson Bull 88:184-230.

Mock, D.W. (1978). Pair-formation displays of the Great Egret. Condor 80: 159-172.



श्रुति पी के छत्तीसगढ़ के धमतरी ज़िले की कुरूद तहसील में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में एसोसिएट रिसोर्स पर्सन के रूप में काम कर रही हैं। वे कालीकट यूनिवर्सिटी से भौतिकशास्त्र में स्नातक हैं और अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय बेंगलूरु से एमए (शिक्षा) में स्नातकोत्तर हैं। उनकी रुचि विज्ञान शिक्षा में है। उनसे sruthi.pk@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनीष आज़ाद **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय